बरेली, रविवार
4 मई, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4+4=26

दैनिक जागरण

रिश्तेदारों के विरोध व उपहास से मजबूत हुआ संकल्प

एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक देवमूर्ति ● जागरण

बरेली : 34 वर्ष की उम्र में आज युवा अपने करियर को लेकर फिक्रमंद होते हैं, लेकिन इस उम्र में जो सपना देखता है, उसे पूरा करने के लिए समाज से टकराने का जज्बा रखता है। दुनिया उसे सलाम करती है। ऐसी ही शख्स हैं देव मूर्ति, जिन्हें आज लोग एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक एवं चेयरमैन के रूप में जानते हैं। उन्होंने भी इसी उम्र में सपना देखा। पूरा किया और अपने पिता के नाम को अमर करने के साथ अपनी जिंदगी को भी उद्देश्यपूर्ण बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और गांधीवादी नेता स्वर्गीय राम मूर्ति के नाम को चिरस्थायी रखने के संकल्प में बना एसआरएमएस ट्रस्ट पिता-पुत्र के स्नेह की अद्वितीय मिसाल है। लोगों की आलोचनाओं, रिश्तेदारों के तानों और पूंजी की कमी जैसे अनगिनत अवरोधों को पार कर हजारों लोगों के घरों को सींच रहा यह सपना आज किसी परिचय का मोहताज भी नहीं। एसआरएमएस ट्रस्ट के 35 वर्ष पूरे होने पर उन्होंने इन वर्षों के अनुभव को जागरण के साथ साझा किया। देव मूर्ति के साथ संवाददाता कमलेश शर्मा की बातचीत के मुख्य अंश..

एसआरएमएस ट्रस्ट बनाने का विचार आपको कैसे आया?

मेरे पिता राम मूर्ति जी अंतिम दिनों में बीमार थे। बरेली में उन्हें ठीक से उपचार नहीं मिल पाया। अंततः दो अक्टूबर 1988 को वह देवलोक प्रस्थान कर गए। काफी दिन मैं सदमे में रहा। 34 वर्ष उम्र थी मेरी। पिता के नाम और उनके आदर्शों को चिरस्थायी रखने का ख्याल था। उनके नाम से ट्रस्ट बनाने का संकल्प लिया। 1990 में एसआरएमएस ट्रस्ट बना। 1991 में बरेली कालेज में निर्धन आय वर्ग के 11 विद्यार्थियों को 21 हजार रुपये की स्कालरशिप देने के साथ पिता के आदर्शों पर काम शुरू किया। आज 19 तरह की स्कालरशिप एसआरएमएस ट्रस्ट दे रहा है। पिछले वर्ष एसआरएमएस ट्रस्ट ने मेधावी विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक शुल्क माफी योजना शुरू की।

ट्रस्ट बनाने में संघर्ष के दौर से कैसे निकले?

संघर्ष... । लोगों ने तो मजाक उड़ाना शुरू कर दिया था। स्वजन सवाल करने लगे कि इंजीनियरिंग कालेज की परिभाषा जानते हो। रिश्तेदार कहने लगे थे कि देवमूर्ति पर विश्वास मत करना। बरेली के कई कथित दानी महानुभावों के पास गया, लेकिन मदद नहीं मिली। ऐसे में ऊपरवाला सहायक बना। रास्ते बनते गए। रोजगार केंद्र पर पूरी ईमानदारी की। पैसे के लिए नई स्कीम शुरू की। आम लोगों से 50 हजार और एक लाख रुपये डिपाजिट करने को कहा। बैंक ब्याज सह नौकरी भी देने का वायदा किया।

ट्रस्ट का पहला संस्थान कैसे और कब शुरू हुआ ?

प्रदेश का पहला सेल्फ फाइनेंस इंजीनियरिंग कालेज को खोलने का श्रेय एसआरएमएस को मिला। दिसंबर 1994 में इसकी अनुमति मिली लेकिन अपना कैंपस न होने से हमने एक वर्ष बाद 1995 में प्रवेश आरंभ किया। पहले सत्र में इंजीनियरिंग की चार ब्रांचों में 240 बच्चों ने एडमिशन लिया। आज इंजीनियरिंग कालेज में तीन हजार से ज्यादा छात्र हैं। हमारा मकसद रहा कि यहां के विद्यार्थी पूर्ण ज्ञान लेकर जाएं। इसकी बदौलत 21-22 बैच निकल गए। ज्यादातर छात्र-छात्राओं को बेहतर प्लेसमेंट मिला।

समाजसेवा के लिए लोग राजनीति चुनते हैं, आपने राजनीति छोड़ समाजसेवा क्यों चुनी?

दो घोड़ों पर जो भी चढ़ेगा, गिर जाएगा। शुरू में मैं भी दोनों क्षेत्रों को साथ लेकर चला। मैं किसी एक के साथ भी न्याय नहीं कर पा रहा था। राजनीति दलदल की तरह लगने लगी। अगर अगर फंस गए तो निकलना संभव नहीं होगा। ऐसे में शिक्षा क्षेत्र में लोगों को ज्ञान देने, रोजगार देना ज्यादा जरूरी लगा। ऐसा कर डाक्टर, वैज्ञानिक देकर समाज को ज्यादा विकसित करने की उम्मीद दिखी।